दिनांक 06 जून, 2011 को नई दिल्ली में आयोजित कर्पूर चन्द कुलिश अन्तर्राष्ट्रीय एवार्ड फॉर एक्सीलेन्स इन प्रिन्ट जर्नलिज्म हेतु महामहिम श्री राज्यपाल का उद्‌बोधन

आदरणीय प्रधानमंत्री, डा0 मनमोहन सिंह जी, जो विद्वता एवं सिद्धान्त की राजनीति के अद्‌भुत मिश्रण है, विख्यात पत्रकार एवं जाने–माने समाचार पत्र, ''राजस्थान पत्रिका'' के मुख्य सम्पादक, डा0 गुलाब कोठारी, आमंत्रितगण, देवियों, सज्जनों तथा पत्रकार बन्धुओं,

आज की संध्या, इस गौरवमय समारोह में आकर मुझे अत्यन्त आनन्द का अनुभव हो रहा है। हम यहाँ राजस्थान पत्रिका की 55वीं जयन्ती एवं कर्पूर चन्द कुलिश अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कार वितरण के

अवसर पर एकत्रित हुए हैं। आज के हमारे नागरिक, जिसमें हम सभी सम्मिलित है अपने समाज से संबंधित विषयों तथा देश की सीमाओं में और बाहर भी जो कुछ घटित हो रहा है, वह सब जानना चाहते हैं। साथ ही लोग अपने अधिकारों एवं दायित्वों के प्रति भी अपेक्षाकृत अधिक जागरूक है।

राजस्थान पत्रिका के संस्थापक, स्व0 कर्पूर चन्द कुलिश एक ऐसे व्यक्ति थे जो युगदृष्टा थे। उनका जन्म राजस्थान के एक छोटे से गांव सोडा में हुआ था। लेकिन आरम्भ से ही उनमें वे सारे गुण थे जो एक प्रतिभाशली व्यक्ति में होने चाहिये। उनमें ज्ञान, शिक्षा एवं जागरूकता लाने की एक उत्कृष्ट अभिलाषा थी।

यह एक बड़ी बात थी कि तत्कालीन राजस्थान जिसमें प्रगतिशीलता के नाम पर बहुत कुछ नहीं था, वहाँ के निवासियों में उन्होंने समाचार, सूचना, विवेचना एवं सामयिक घटनाओं को जानने की ललक पैदा की। इसके लिये उन्होंने हिन्दी समाचार पत्र का एक छोटा 'बिरवा' रोपा, जो समय के साथ–साथ आज एक विशाल 'वट–वृक्ष' बन गया है। स्व0 कुलिश जी सामाजिक सरोकार से जुड़े थे और उन्होंने अपने संसाधनों का उपयोग समाचार पत्र निकालने में किया, जो उस समय उद्योग कम जन–सेवा अधिक थी। यदि कुलिश जी चाहते तो अपने संसाधनों को ऐसे उद्योग धन्धों में लगा सकते थे जिनसे मुनाफा शीघ्र और

पर्याप्त मात्रा में मिल सकता था, किन्तु उन्होंने समाचार पत्र निकालना श्रेयस्कर समझा। यद्यपि समाचार पत्र के बढ़ने और पनपने में बहुत समय लगता है और मुनाफे की गुजांइश भी बहुत कम होती है। जो भी हो कुलिश जी पक्के इरादों और अपने सपनों को मूर्तरूप देने वाले व्यक्ति थे। मैं उन्हें व्यक्तिगत रूप से जानता था और मैं उनके इन्हीं गुणों के कारण अत्यन्त प्रभावित था।

राजस्थान पत्रिका ने अपने जन्मकाल से ही राजस्थान की जनता को सूचना, जानकारी, शिक्षा तथा स्वस्थ मनोरंजन देना प्रारम्भ कर दिया।

अखबार या समाचार पत्र समाज के ऐसे आईनें हैं, जिनमें जनता अपने वास्तविक स्वरूप को देखती है। पत्रकारिता का एक पुरातन एवं सर्व स्वीकृत सिद्धान्त है–– समाचार उसी प्रकार प्रकाशित होना चाहिए जैसा वह है। लेकिन टिप्पणी अथवा विवेचना में सम्पादक अथवा पत्रकार अपनी इच्छा का प्रयोग कर सकता है। जहाँ तक सच, वास्तविकता और संस्कार एवं संस्कृति का सम्बन्ध है इस पत्र की खबरों में यह भलीभांति परिलक्षित होते हैं। महान फ्रांसिसी लेखक एवं दार्शनिक वाल्तेयर ने समाचारों की स्वतंत्रता के बारे में कहा है कि ''हो सकता है मैं आपके विचारों से सहमत न हो पाऊं फिर भी विचार प्रकट करने के आपके

अधिकारों की रक्षा करूंगा।'' यह प्रसिद्ध उद्धहरण राजस्थान पत्रिका के सम्पादकीय पृष्ठ पर मुद्रित रहता है और यह पत्रिका की निष्ठा का ज्वलन्त प्रमाण है।

यह राजस्थान पत्रिका की निष्ठा ही है कि निष्पक्षता पत्रकारिता एवं ईमानदार तथा प्रबुद्ध पत्रकारों को बढ़ावा देने के लिये एक अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कार की स्थापना की, जो अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रिन्ट मीडिया में उत्कृष्ट रिर्पोटिंग करने वाले पत्रकारों को दिया जाता है।

आदरणीय प्रधानमंत्री, डा0 मनमोहन सिंह जो इस समय हमारे बीच हैं। उनके द्वारा देश ही क्यों, बल्कि संसार के अनेक

देशों से आये हुए लब्ध प्रतिष्ठित पत्रकारों को इस पुरस्कार से सम्मानित किया जायेगा।

शब्द ईश्वर है– शब्द ओंकार है– ऐसा हमारी संस्कृति में कहा जाता है। लिखित ज्ञान सर्व साधारण को तुरन्त और अधिक ग्राह्य होता है। ऐसा नहीं कि सूचना एवं संचार के अन्य माध्यमों की उपादेयता कम है, किन्तु लिखित शब्द की श्रेष्ठता और उसका गौरव सबसे अलग है, जो सदियों से चलता चला आ रहा है। यदि गम्भीरता से सोचा जाये तो समाचार पत्रों को हम ऐसे प्रकाश स्तम्भ कहेंगे, जिसके आलोक में लोग घटनाओं को उनके

वास्तविक स्वरूप में देख सकेंगे और सत्य के प्रति उनकी निष्ठा बनी रहेगी।

इन्हीं शब्दों के साथ मैं उन सभी प्रतिभावान एवं प्रतिष्ठित पत्रकारों को अपनी हार्दिक शुभकामनाएं देना चाहूंगा , जिन्हें आज सम्मानित किया जा रहा है।

धन्यवाद – नमस्कार